दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

(संसदीय अधिनियम 14, 1964 द्वारा घोषित 'राष्ट्रीय महत्व प्राप्त संस्था')

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

DAKSHINA BHARAT HINDI PRACHAR SABHA, MADRAS

(DECLARED BY PARLIAMENT AS AN INSTITUTION OF NATIONAL IMPORTANCE BY ACT No. 14 of 1964)

POST GRADUATE AND RESEARCH COMPLEX

एम.ए. (हिन्दी) / स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा

M.A. (HINDI) / P.G. DIPLOMA IN TRANSLATION

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

DISTANCE EDUCATION DIRECTORATE

विवरण पत्रिका

PROSPECTUS

DAKSHINA BHARAT HINDI PRACHAR SABHA, MADRAS
THANIKACHALAM ROAD,
T. NAGAR, CHENNAI - 600 017.
PHONE : 2433 2094, 2434 8640, 2434 1824, 2434 5486,
FAX : (044) 24332098, 24348420
Website - www.dbhpsabha.org
Direct Phone Number to the Distance Education: 24332033; Fax : (044) 24332033

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

एक झाँकी

1. **दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा** शुरू से अब तक दो करोड़ से अधिक लोगों को हिन्दी सिखा चुकी है।

2. विविध शीर्षक वाली करीब चार सौ पचास से अधिक हिन्दी पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी है।

3. बावन हज़ार प्रशिक्षित हिन्दी शिक्षकों, प्रचारकों को तैयार कर चुकी है।

4. करीब 16 हज़ार केन्द्रों में हिन्दी वर्गों का संचालन हो रहा है।

5. सभा के प्रयत्न से दक्षिण में (द्विभाषा सूत्र को लागू करने के कारण तमिलनाडु राज्य को छोड़कर) हिन्दी न केवल मिडिल स्कूल व हाई स्कूलों में, बल्कि प्रायः सभी कॉलेजों में भी पढ़ाई जा रही है।

6. सभा दक्षिण के चारों राज्यों के विद्यालयों में हिन्दी को प्रवेश दिलाने में एक साधन के रूप में रही है। प्रौढ़ों और महिलाओं को साक्षर बनाने में इसकी मुख्य भूमिका रही है।

7. हिन्दी शिक्षा के साथ-साथ दक्षिण के प्रादेशिक भाषाओं तथा उनके साहित्य के समन्वय, आदान-प्रदान तथा हिन्दी में मौलिक सृजन-प्रक्रिया में भी सभा, मार्ग-दर्शन कर रही है।

8. सभा की परीक्षाओं में हर साल लगभग पाँच लाख परीक्षार्थी सम्मिलित होते हैं।

9. दक्षिण के चारों राज्यों में सभा की शाखा-प्रशाखाएँ, निजी-भवन तथा मुद्रण सुविधाओं के साथ-साथ हिन्दी के विकास की गतिविधियाँ फूल-फल रही हैं।

10. सभा के "उच्च शिक्षा और शोध-संस्थान" द्वारा चारों प्रांतों में एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी., डी.लिट्. तथा हिन्दी माध्यम के बी.एड./शिक्षा स्नातक, हिन्दी प्रचारक प्रशिक्षण एवं अनुवाद डिप्लोमा कॉलेज चलाए जा रहे हैं।

11. दूरस्थ माध्यम से एम.ए. (हिन्दी), स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा, बी.ए. (तीन वर्ष), पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक चलाए जा रहे हैं।

12. केन्द्र सभा का वार्षिक बजट पाँच करोड़ से अधिक का है।

13. दृश्य-श्रव्य माध्यम से (विज्ञान के नये आविष्कारों को काम में लाते हुए) हिन्दी प्रचार की नई दिशा में काम हो रहा है।

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

भारत सरकार ने सभा को सन् 1964 में संसद में पारित अधिनियम सं. 14 के अनुसार "राष्ट्रीय महत्व की संस्था" के रूप में घोषित कर अभिस्वीकृति दी है।

GOVERNMENT OF INDIA

MINISTRY OF EDUCATION

New Delhi-2, Dated the 30th May 1964

NOTIFICATION

(No. F. 19-49/61-H. 1)

No. S.O. ..... in exercise of the powers conferred by sub-section (2) of section 1 of the Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha Act, 1964 (Act.14 of 1964), the Central Government hereby appoints the 1st day of June, 1964, as the date on which the said Act shall come into force.

R. K. KAPUR

Joint Educational Adviser

Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha

(Central Act 14 of 1964)

AN INSTITUTION OF NATIONAL IMPORTANCE

Whereas the object of the institution known as the Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha are such as to make it an institution of national importance, it is hereby declared that the **Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha is an Institution of National Importance.**

(Section 3 of the Act)

POWERS OF THE SABHA

"Notwithstanding anything contained in the University Grants Commission Act 1956, or in any other law for the time being in force, the Sabha may hold such examinations and grant such degrees, diplomas and certificates for proficiency in Hindi or in the teaching of Hindi as may be determined by the Sabha from time to time."

(Section 4 of the Act)

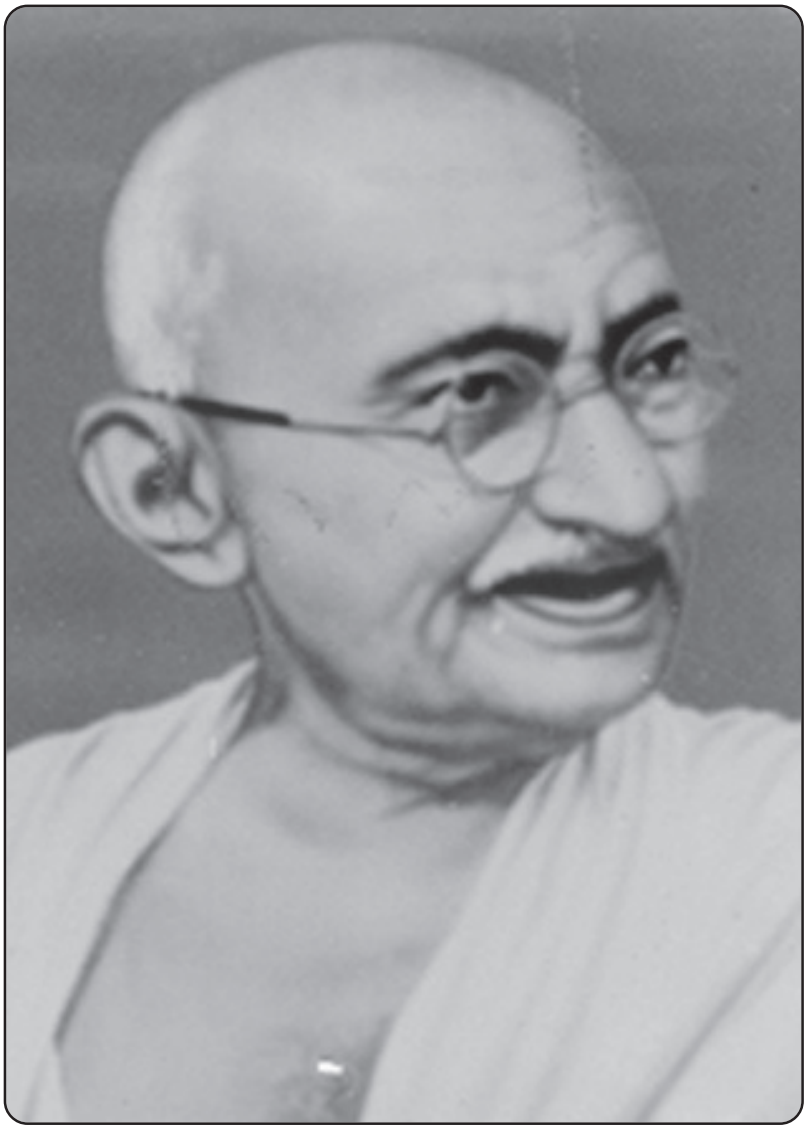

पूज्य बापू
संस्थापक एवं प्रथम अध्यक्ष
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

संसदीय अधिनियम 14, सन् 1964 द्वारा घोषित "राष्ट्रीय महत्व की संस्था"

संस्थापित : सन् 1918

सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष	:	**डॉ. जस्टिस शिवराज वी. पाटिल**
प्रथम उपाध्यक्ष	:	**श्री एच. हनुमंतप्प**
द्वितीय उपाध्यक्ष	:	**श्री ए.पी.सी.वी. चोक्कलिंगम**
समकुलपति	:	**श्री आर.एफ़. नीरलकट्टी**
कोषाध्यक्ष	:	**श्री सी.एन.वी. अण्णामलै**
चैयरमेन, कार्यकारिणी समिति एवं अध्यक्ष, शिक्षा परिषद्	:	**श्री एस. पार्थसारथी**
प्रधान सचिव	:	**श्री गोदा वेंकट कृष्णाराव**
प्रबंध निधिपालक	:	**श्री ई.एस. जोस**
विशेष अधिकारी	:	**श्री के. दीनबन्धु, आई.ए.एस. (सेवा निवृत्त)**
कुलसचिव	:	**प्रो. निर्मला एस. मौर्य**

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान

संस्थापित : सन् 1964

संस्थान के पदाधिकारी

कुलाधिपति

डॉ. जस्टिस शिवराज वी. पाटिल

कुलपति

श्री एच. हनुमंतप्प

समकुलपति

श्री आर.एफ़. नीरलकट्टी

कुलसचिव

प्रो. निर्मला एस. मौर्य

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा : एक परिचय

हिन्दी भाषा के प्रचार के द्वारा जन-जागरण, प्रजातंत्र की जीवन-प्रणाली के प्रति आस्था उत्पन्न करने तथा राष्ट्रीय एकीकरण को सिंचित करने के पावन उद्देश्य से सन् 1918 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की नींव डाली थी और वे आजीवन इस संस्था के अध्यक्ष रहे। सन् 1918 से मद्रास में हिन्दी वर्ग चलने लगे। गांधीजी के सुपुत्र देवदास गांधी प्रथम हिन्दी प्रचारक बने। पं. जवाहरलाल नेहरू, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, आचार्य विनोबा भावे, काका कालेलकर, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, श्री पी.वी. नरसिंह राव, श्री आर. वेंकटरामन, डॉ. बी.डी. जत्ती आदि मनीषियों ने सभा की गतिविधियों में सक्रिय योगदान दिया है।

सन् 1964 में संसद के अधिनियम द्वारा सभा को राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया। सभा को विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रमों की शिक्षा देने और उपाधियाँ प्रदान करने का अधिकार प्राप्त हुआ।

सभा का केन्द्रीय कार्यालय चेन्नई (मद्रास) में है। सभा की शाखाएँ दक्षिण के चारों प्रान्तों - केरल, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश और तमिलनाडु - में हैं तथा दिल्ली में संपर्क कार्यालय है।

सभा के द्वारा उपलब्ध सेवाएँ:

i. प्रारंभिक एवं उच्च परीक्षाएँ
ii. पाठ्य पुस्तकों का निर्माण एवं प्रकाशन
iii. प्रचारक/शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम
iv. एम.ए., डी.लिट्., बी.एड. तथा स्नातकोत्तर-अनुवाद डिप्लोमा, पत्रकारिता डिप्लोमा पाठ्यक्रम, बी.ए., एम.ए. (हिन्दी), स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा, एम.फिल., पीएच.डी. (दूरस्थ शिक्षा)।
v. मानक शब्दकोशों का निर्माण
vi. आडियो कैसेट का निर्माण–व्याकरण पाठ, बोलचाल की हिन्दी, बापू के प्रिय भजन आदि।
vii. जनसाधारण के लिए सार्वजनिक पुस्तकालय तथा उच्च शिक्षा और शोध संस्थान से संबद्ध अनुसंधान कार्य के लिए राष्ट्रीय हिन्दी ग्रन्थालय की सुविधाएँ।

सभा का उद्देश्य:

सभा के प्रमाणित प्रचारकों के द्वारा दक्षिण के चारों प्रान्तों के गाँव-गाँव में हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था तथा एतद्वारा राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा हिन्दी के लिए दक्षिण भारत भर में अनुकूल वातावरण सुनिश्चित करना; हिन्दी के विकास के लिए विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी को हर प्रकार से समृद्ध बनाने में योग देना।

अन्य कार्यकलाप:

i. राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ, विचार मंच, कवि गोष्ठियाँ, कवि-लेखक समादर, भाषण-मालाओं का आयोजन।
ii. अनुवाद के क्षेत्र में दक्षता प्रदान करने स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम तथा अनुवाद कार्य के लिए सुविधाएँ।
iii. हिन्दी और अंग्रेजी के अलावा दक्षिण की सभी भाषाओं में कम्प्यूटर संसाधित मुद्रण सुविधाएँ।

सभा के इतिहास की कुछ प्रमुख घटनाएँ:

सन् 1918 सभा की स्थापना व प्रथम प्रचारक देवदास गांधी द्वारा हिन्दी वर्ग का प्रारंभ।

सन् 1920 प्रान्तीय भाषाओं में हिन्दी स्वबोधिनी का प्रकाशन।

सन् 1922 हिन्दी प्रचार सभा मुद्रणालय की स्थापना।

सन् 1922 हिन्दी प्रचारक प्रशिक्षण विद्यालय का प्रारंभ।

सन् 1923 "हिन्दी प्रचारक" पत्रिका का प्रकाशन - जो उत्तरोत्तर "हिन्दी प्रचार समाचार" के नाम से प्रकाशित होने लगा।

सन् 1936 प्रान्तीय शाखाओं की स्थापना।

सन् 1938 "दक्षिण भारत" साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन।

सन् 1946 बापूजी ने लगातार दस दिन जनवरी 21 से 30 तक सभा में ठहरकर विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया।

सन् 1946 गांधीजी की अध्यक्षता में रजत जयंती समारोह।

सन् 1964 भारत की संसद के द्वारा सभा को "राष्ट्रीय महत्व की संस्था" घोषित किया जाना।

सन् 1971 स्वर्ण जयंती समारोह।

सन् 1979 हीरक जयंती समारोह।

सन् 1991 राष्ट्रीय हिन्दी अनुसंधान ग्रन्थालय का उद्घाटन।

सन् 1993 अमृतोत्सव का उद्घाटन।

सन् 1994 आडियो कैसेट के माध्यम से प्रचार-प्रसार शुरू (हिन्दी व्याकरण, बोलचाल की हिन्दी आदि)।

सन् 1999 "बापू के प्रिय भजन" कैसेट का लोकार्पण।

सन् 1999 "त्रिभाषा शब्द कोश" का प्रकाशन।

सभा के प्रमाणित प्रचारक

सभा की राष्ट्रभाषा विशारद और राष्ट्रभाषा प्रवीण परीक्षाओं में उत्तीर्णता के पश्चात् उपाधिधारी (यदि उनकी आयु 18 वर्ष अथवा उससे अधिक हो तो) सभा के प्रमाणित प्रचारक बन सकते हैं। वे गाँवों व शहरों में सबेरे और शाम के वक्त वर्ग संचालन करके सभा की परीक्षाओं के लिए विद्यार्थी तैयार करते हैं। फिलहाल महिलाओं सहित इन प्रमाणित प्रचारकों की कुल संख्या करीब 52,000 है।

पुस्तक प्रकाशन व साहित्य निर्माण

भारतीय प्रकाशक संघ की ओर से दक्षिण भारत में हिन्दी पुस्तक प्रकाशन एवं बिक्री के माध्यम से समाज की विशिष्ट सेवा के लिए दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा को "विशिष्ट पुस्तक विक्रेता पुरस्कार" दिया गया।

राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी की ओर से पांडिचेरी में आयोजित 12 वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में पुस्तक प्रदर्शनी का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

प्रायः प्रारंभिक व उच्च परीक्षाओं के लिए आवश्यक सभी पाठ्य-पुस्तकों की रचना व प्रकाशन सभा की ओर से किया जाता है। सभा ने पाठ्य-पुस्तकों के अलावा दक्षिण की संस्कृति, साहित्य आदि से संबंधित स्तरीय ग्रंथों के साथ-साथ हिन्दी और चारों प्रांतीय भाषाओं के कोशों का संकलन और प्रकाशन भी किया है।

सभा द्वारा प्रकाशित हिन्दी-अंग्रेज़ी, हिन्दी-तेलुगु, हिन्दी-तमिल, हिन्दी-कन्नड और हिन्दी-मलयालम की स्वबोधिनियाँ-अत्यंत लोकप्रिय हुई हैं। हाल ही में सभा ने त्रिभाषा "हिन्दी-अंग्रेज़ी-तमिल" कोश भी प्रकाशित किया है, जिसका सर्वत्र स्वागत हुआ है। उल्लेखनीय बात है कि अब तक सभा के द्वारा 450 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है।

पत्रिकाएँ

सभा प्रारंभ से ही मासिक "हिन्दी पत्रिका" प्रकाशित कर रही है। पहले उसका नाम "हिन्दी प्रचारक" था। अब "हिन्दी प्रचार समाचार" है। इसमें हिन्दी प्रचारकों तथा विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सामग्री प्रकाशित होती है। इसके अलावा सभा "दक्षिण भारत" नामक एक उच्च स्तरीय त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन भी विगत 23 वर्षों से कर रही है।

मुद्रणालय

सभा का मुद्रणालय भारत की लगभग आठ भाषाओं में मुद्रण करता है। सभा के मुद्रणालय को साफ आकर्षक और सुंदर छपाई के लिए अखिल भारतीय विशेषज्ञ संघ तथा भारत सरकार की ओर से पुरस्कार मिले हैं।

सभा के महत्वपूर्ण कार्य

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की अवधारणा के अनुसार बहुभाषी भारत में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकारने तथा राष्ट्रीय एकता की प्रेरणा देने में सभा ने अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किया है। दक्षिण के चारों प्रांतों को राष्ट्रभाषा की दृष्टि से एक इकाई मानकर सभा ने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है।

सभा के प्रयत्नों का ही यह शुभ परिणाम है कि स्वतंत्रता के पहले अनेक जगहों में और स्वतंत्रता के बाद सर्वत्र दक्षिण के स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में हिन्दी विषय तथा हिन्दी माध्यम का प्रवेश हुआ, हिन्दी के विभाग खोले गए, जिससे हज़ारों लोग हिन्दी में उच्च शिक्षा प्राप्त कर लाभान्वित हुए और यह क्रम आज भी जारी है।

स्त्री-शिक्षा की दिशा में सभा का काम महत्वपूर्ण है। जिन दिनों देश में स्त्री-शिक्षा का वातावरण सुषुप्तावस्था में था उस समय इसने हिन्दी के द्वारा महिलाओं को शिक्षित किया, उनमें आत्मविश्वास जागृत किया और उनको घर के संकुचित दायरे से बाहर निकलकर समाज और देश की सेवा करने की दिशा में प्रोत्साहित किया। इसके अलावा सभा ने ऐसे कई युवकों को भी हिन्दी में शिक्षित किया, जो स्कूलों में नहीं जा पाते थे। कहने का तात्पर्य है कि सभा ने **प्रौढ़ शिक्षा** के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किया है।

सभा का एक और महत्वपूर्ण स्थान साहित्य के क्षेत्र में है। सभा ने दक्षिण की चारों भाषाओं में सैकड़ों ऐसे लोगों को तैयार किया, जिन्होंने हिन्दी तथा दक्षिणी भाषाओं के बीच साहित्यिक आदान-प्रदान का कार्य किया और कई मौलिक कृतियों की रचना कर साहित्य की अभिवृद्धि की।

हिन्दी शिक्षण के क्षेत्र में सभा ने अत्याधुनिक इलक्ट्रानिक दृश्य-श्रव्य माध्यम के क्षेत्र में भी कदम बढ़ाए हैं। इसके अन्तर्गत सभा तीन आडियो कैसेट (ध्वन्यंकित पाठ) जारी कर चुकी है –

(1) बोलचाल की हिन्दी (2) हिन्दी का सही प्रयोग (3) हिन्दी व्याकरण, भाग-I

हाल ही में सभा ने बापू के प्रिय भजनों का ध्वन्यंकन (आडियो कैसेट) जारी किया है। निकट भविष्य में वीडियो कैसेटों के निर्माण की योजना भी कार्यान्वित होगी।

सभा ने बोलचाल की हिन्दी पर ज़ोर देते हुए, "बच्चों की किताब", "रोज़मर्रा हिन्दी", "बोलचाल की हिन्दी" एवं "संभाषण हिन्दी" नाम की पुस्तकों का प्रकाशन तथा बालकों को स्कूलों में अंशकालीन शिक्षा के लिए "परिचय" परीक्षा संचालन कार्य भी शुरू किया है।

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान (विश्वविद्यालय शाखा)

सन् 1964 ई. में संसद में पारित अधिनियम सं. 14 के अनुसार सभा को हिन्दी में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम चलाने और डिग्रियाँ प्रदान करने का अधिकार मिल गया है, उसीके अन्तर्गत सभा ने उच्च शिक्षा और शोध संस्थान के कार्य का शुभारंभ किया। इस संस्थान द्वारा हिन्दी में स्नातकोत्तर स्तर पर साहित्य और प्रयोजनमूलक पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। नियमित एम.ए. के वर्ग संचालित हो रहे हैं। एम.फिल., पीएच.डी., डी.लिट., के लिए शोध कार्य संपन्न हो रहा है और डिग्रियाँ प्रदान की जा रही हैं। संस्थान हिन्दी शिक्षक तैयार करने की दृष्टि से बी.एड., एवं शिक्षा स्नातक कालेज चला रहा है। अब बी.ए. (तीन वर्ष), एम.ए. (हिन्दी), स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा, एम.फिल. और पीएच.डी. का दूरस्थ शिक्षा (Distance Education) पाठ्यक्रम भी शुरू हुआ है।

राष्ट्रीय हिन्दी अनुसंधान ग्रंथालय

सभा ने अपनी शैक्षणिक, साहित्यिक तथा प्रचारात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक ग्रंथालय शुरू किया, जो धीरे-धीरे बढ़ते हुए 40,000 ग्रंथों का आगार बन गया है। इसके अलावा जबसे सभा का उच्च शिक्षा और शोध संस्थान का प्रारंभ हुआ और शोध कार्य भी होने लगा, तबसे महसूस किया गया कि एक विशाल हिन्दी ग्रंथालय की आवश्यकता है। इसके लिए एक करोड़ रुपये की लागत से चेन्नई में "राष्ट्रीय हिन्दी अनुसंधान ग्रंथालय भवन" का निर्माण किया गया। इस ग्रंथालय का निरंतर विकास हो रहा है। अब इसमें करीब एक लाख से अधिक पुस्तकें हैं।

समर्पित हिन्दी सेवी, हिन्दी प्रचारकों, हिन्दी प्रेमियों और उत्साही छात्र-समुदाय के सहयोग एवं भारत सरकार के सीमित अनुदान की सहायता से महात्मा गांधी पदवीदान मण्डप का निर्माण सन् 1985-86 में संपन्न हुआ है।

शिक्षा विभाग

प्रचारक प्रशिक्षण विद्यालय निम्नलिखित केन्द्रों में चल रहे हैं: हैदराबाद, विशाखपट्टणम, तेनाली, गुन्तकल, अवनिगड्डा, विजयवाड़ा, काकिनाड़ा, जनगाँव, तिरुच्ची, ऊटी व चेन्नई।

महत्वपूर्ण वर्ष : सभा के इतिहास की दृष्टि से

संस्था की स्थापना	...	सन्	1918
प्रांतीय सभाओं की स्थापना	...	,,	1936
रजत जयंती	...	,,	1946
संपर्क कार्यालय, दिल्ली, की स्थापना	...	,,	1961
"राष्ट्रीय महत्व संस्था" की घोषणा एवं "उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान" की स्थापना	...	,,	1964
स्वर्ण जयंती	...	,,	1971
हीरक जयंती	...	,,	1979
अमृतोत्सव	...	,,	1993
दूरस्थ शिक्षा माध्यम से एम.ए. (हिन्दी) तथा स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा पाठ्यक्रम	...	,,	2002
दूरस्थ शिक्षा माध्यम से बी.ए. (तीन वर्षीय) पाठ्यक्रम	...	,,	2004

प्रमुख दीक्षान्त भाषण-दाता

महात्मा गांधी, आचार्य काका कालेलकर, पंडित रामनरेश त्रिपाठी, मुंशी प्रेमचन्द, पंडित सुन्दरलाल, बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन, श्रीमती सरोजिनी नायुडु, डॉ. पट्टाभि सीतारामय्या, आचार्य विनोबा भावे, डॉ. जाकिर हुसैन, आर.आर. दिवाकर, श्रीप्रकाश, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, बाबू जगजीवन राम, डॉ. बी. गोपाल रेड्डी, डॉ. के.एल. श्रीमाली, लाल बहादुर शास्त्री, डॉ. रामधारी सिंह "दिनकर", मोरारजी देसाई, डॉ. वी.वी. गिरी, डॉ. करन सिंह, श्री के.सी. पंत, श्री एल.पी. साही, श्रीमती राम दुलारी सिन्हा, श्री अच्युत पटवर्धन, प्रो. रामलाल पारीख, श्री खुर्शीद आलम खाँ, डॉ. मोटूरी सत्यनारायण, डॉ. अर्जुन सिंह, श्रीमती कृष्णा साही, श्रीमती सुशीला रस्तोगी, प्रो. नारायणदत्त तिवारी, श्री शिवमंगल सिंह "सुमन", जस्टिस रंगनाथ मिश्र, डॉ. देवेन्द्र गुप्त, श्री राधाकृष्ण बजाज, डॉ. रजनी रॉय, प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद, प्रो. विष्णुकान्त शास्त्री, डॉ. हरि गौतम, श्री टी.एन. चतुर्वेदी आदि।

सभा की प्रमुख पत्रिकाएँ:–

हिन्दी प्रचार समाचार (मासिक)	-	चेन्नई
हिन्दी पत्रिका ,,	-	(तमिलनाडु) तिरुच्चिरापल्ली
केरल भारती ,,	-	(केरल) एरणाकुलम
पूर्णकुंभ, स्रवंती ,,	-	(आन्ध्र) हैदराबाद
भारतवाणी ,,	-	(कर्नाटक) धारवाड़
दक्षिण भारत (साहित्यिक-त्रैमासिक)	-	चेन्नई

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, एम.ए.(हिंदी) एवं स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा पाठ्यक्रम

मुख्यालय:

	MADRAS	D.B. Hindi Prachar Sabha, Thanikachalam Road, T. Nagar, Chennai-600 017. Phone : 044 - 24332033, 24341824

क्षेत्रीय केन्द्र :

1.	DHARWAD	D.B. Hindi Prachar Sabha, (KARNATAKA) D.C. Compound, Dharwad-580 001. Phone : 0836 - 2747763
2.	HYDERABAD	D.B. Hindi Prachar Sabha, Khairatabad, Hyderabad-500 004. Phone : 040 - 23316865
3.	ERNAKULAM	D.B. Hindi Prachar Sabha, Chittoor Road, Ernakulam, Cochin-682 016. Phone : 0484 - 2377766
4.	TRICHY	D.B. Hindi Prachar Sabha, (TAMILNADU) 35-B, Tennur High Road, Tiruchirapalli-620 017. Phone : 0431 - 2792929

दूरस्थ शिक्षा परीक्षा केन्द्र :

1.	VIJAYAWADA	D.B. Hindi Prachar Sabha, Hindi College Road, Machavaram, Vijayawada-520 004. Phone : 0866 - 2435039
2.	BANGALORE	D.B. Hindi Prachar Sabha, 113/114, Subedar Chatram Road, Sheshadiri Puram, (Opp. Hoyasala Hotel), Bangalore-560 020. Phone : 080 - 23310150
3.	MADURAI	D.B. Hindi Prachar Sabha, No.9, Alavukkara Street, South Krishnan Koil Opp. Lane, South Masi Street, Madurai-625 001. Phone :
4.	VISHAKHAPATNAM	D.B. Hindi Prachar Sabha, Door No.13-322/2 Sector-II, Ambedkar Nagar, Arilova, Vishakhapatnam - 530 040. (A.P.)
5.	KOPPAL	D.B. Hindi Prachar Sabha, Gadah Road, Koppal - 583 231. (KARNATAKA)
6.	MYSORE	D.B. Hindi Prachar Sabha, Vani Vilasam Road, K.R. Mohalla, Mysore - 570 004. (KARNATAKA)
7.	JANGOAN	D.B. Hindi Prachar Sabha, A.B.V. Degree College Road, Jangoan - 506 167. Warangal (Dt.) (A.P.
8.	OOTY	D.B. Hindi Prachar Sabha, Coonoor Road, OOTY - 643 001. (T.N.)

दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
एम.ए. (हिंदी)/स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

प्रवेश:

संस्थान के एम.ए. (हिन्दी)/स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने के लिए वे ही अभ्यर्थी अर्ह होंगे, जोः-

संस्थान के द्वारा स्वीकृत, भारत के किसी भी सांविधिक विश्वविद्यालय से हिन्दी को एक विषय के रूप में लेकर (10+2+3 अथवा समकक्ष) उपाधि प्राप्त कर चुके हों;

अथवा

संस्थान के द्वारा स्वीकृत भारत के किसी भी सांविधिक विश्वविद्यालय की उपाधि के साथ (10+2+3 अथवा समकक्ष) दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास की राष्ट्रभाषा प्रवीण या सभा के द्वारा स्वीकृत समकक्ष हिन्दी परीक्षा में उत्तीर्ण हुए हों।

1. आवेदन पत्र को पूर्णरूप से सावधानी से भरकर भेजना जरूरी है। अपूर्ण आवेदन-पत्रों पर विचार नहीं किया जाएगा।
2. आवेदन पत्र के साथ प्रस्तुत की जानेवाली जेराक्स अंक सूची (Xerox copies of Marks Sheet) प्रमाण-पत्र आदि को किसी राजपत्रित अधिकारी/स्कूल, कालेज के प्रधान के द्वारा साक्षीकृत करवाना ज़रूरी है।
3. एम.ए. (हिन्दी)/स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा के आवेदन पत्र के साथ निम्नलिखित मूल प्रमाण पत्रों और उनकी एक-एक जेराक्स प्रति संलग्न करना आवश्यक हैः–
   (अ) दसवीं (10th S.S.L.C.)
   (आ) एच.एस.सी. (+2) या समकक्ष
   (इ) डिग्री (I, II, III) अंक सूची एवं प्रमाण-पत्र
   (ई) राष्ट्रभाषा प्रवीण या समकक्ष अंक सूची एवं प्रमाण-पत्र
   (उ) मूल स्थानांतरण प्रमाण-पत्र (T.C.) (केवल एम.ए. में प्रवेश के लिए)
   (ऊ) मूल संस्थानांतरण प्रमाण-पत्र (Migration Certificate) (केवल एम.ए. में प्रवेश के लिए)
   - यदि प्रमाण-पत्र हिन्दी अथवा अंग्रेज़ी को छोड़कर किसी अन्य भाषा में हों, तो उनका अंग्रेज़ी में अनुवाद– करवाकर राजपत्रित अधिकारी अथवा किसी शैक्षिक संस्था के प्रधान के द्वारा साक्षीकृत करवाएं।
4. स्थानांतरण तथा संस्थानान्तरण को छोड़कर सभी मूल प्रमाण पत्र जाँच के बाद वापस दे दिये जायेंगे। जिनको ये मूल प्रमाण-पत्र निश्चित समय के अंदर वापस प्राप्त नहीं हुए, वे निदेशक के नाम पत्र लिख सकते हैं।
5. जो छात्र वर्ष के बीच में अथवा प्रथम वर्ष के बाद पढ़ाई छोड़ देना चाहते/चाहती हैं, उन्हें द्वितीय वर्ष प्रारंभ होने के पहले ही लिखित सूचना निदेशक को देनी होगी।
6. आवेदकों को सलाह दी जाती है कि निदेशालय को भेजने के पहले, सभी मूल प्रमाण पत्रों की जेराक्स प्रतियाँ पर्याप्त संख्या में रख लें।
7. छात्रों की जिम्मेदारी होगी कि वे समय पर शिक्षा एवं अन्य शुल्क जमा करके **पहचान-पत्र** दूरस्थ शिक्षा निदेशालय से प्राप्त करें।
   - उल्लिखित सभी प्रमाण-पत्र भेजना आवश्यक है अन्यथा छात्र/छात्रा का आवेदन-पत्र अस्वीकृत किया जा सकता है। प्रवेश के संबंध में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय का निर्णय अंतिम होगा।
8. एम.ए. (दो वर्ष) पाठ्यक्रम पूरा करने **से पहले छात्र किसी अन्य कोर्स में प्रवेश नहीं ले सकेंगे।** ऐसा करने से उनका छात्रत्व रद्ध कर दिया जाएगा।

नोट : यदि किसी कारणवश मूल स्थानांतरण प्रमाण-पत्र/संस्थानांतरण प्रमाण-पत्र जमा नहीं किया जाता तो निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय को आवेदन-पत्र देकर 20/- के शपथ पत्र पर छात्र को इसका दायित्व लेते हुए मसौदा भेजना होगा।

परीक्षाएँ:

1. परीक्षाएँ प्रत्येक सत्र के अंत में दिसंबर एवं मई में चलाई जाएँगी। परीक्षा आवेदन-पत्र निर्धारित समय पर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा परीक्षा शुल्क के विवरण के साथ भेजा जाएगा।
2. सभी पाठ्यक्रम की लिखित परीक्षाएँ दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा निर्धारित केंद्रों (चेन्नई, हैदराबाद, धारवाड़, एरणाकुलम) पर चलायी जायेंगी। अन्य केंद्रों पर भी परीक्षा चलाई जा सकती है यदि उस केंद्र पर एम.ए./अनुवाद डिप्लेमा के कम से कम 20 विद्यार्थी हों। यह संख्या 10 तक भी हो सकती है यदि बी.ए. के परीक्षार्थियों की संख्या उस केंद्र पर पर्याप्त हो।
3. परीक्षाएँ लगातार रविवार और छुट्टियों में भी चलायी जाएगी जिस से सेवारत लोगों को कम से कम छुट्टी लेनी पड़े।
4. निर्धारित समय पर परीक्षा शुल्क न जमा करने वाले छात्र-छात्राओं का परीक्षा फल रोक लिया जाएगा।
5. परीक्षा आवेदन-पत्र पर तीन पासपोर्ट साइज़ का फोटो चिपकाना अनिवार्य होगा।
6. परीक्षा शुल्क रु.250/- एम.ए. प्रथम वर्ष के रु.1000/- एम.ए. द्वितीय वर्ष के लिए रु.1500/- और स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा के लिए रु.1250/-, विलंब शुल्क पंद्रह दिन तक के लिए रु.150/- एवं उसके बाद तीस दिन तक के लिए रु.300/- होगा।

   DD, The Registrar Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, Madras के नाम से लेकर रजिस्टर्ड डाक द्वारा The Director, Distance Education Directorate, Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, T. Nagar, Chennai-17 को भेजना होगा।
7. एम.ए. के वे विद्यार्थी जो प्रथम वर्ष की परीक्षा नहीं दे सके हैं उन्हें द्वितीय वर्ष के कोर्स में प्रवेश की अनुमति दी जा सकती है ऐसी स्थिति में उन्हें रुपये 1000/- नवीकरण शुल्क सत्र प्रारंभ होने के भीतर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय को भेजना होगा। यदि विद्यार्थी पहले वर्ष का दत्त कार्य भेज चुके हैं तो उनका मूल्यांकन उसी दत्त कार्य के आधार पर किया जाएगा अन्यथा प्रथम वर्ष का दत्त कार्य द्वितीय वर्ष के दत्त कार्य के साथ निदेशालय में जमा करना अनिवार्य होगा। प्रथम वर्ष का नया दत्त कार्य मंगवाने एवं समय पर लिखकर जमा करने की जिम्मेदारी छात्र की होगी। इसके लिए छात्र को निर्धारित शुल्क प्रति प्रश्न पत्र रु.50 + 100 (डाक-खर्च) डी.डी. या चालान द्वारा जमा करना होगा तथा निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय को पत्र लिखकर नए सत्र का दत्त कार्य मंगवाना होगा। इसके बाद ही नियमानुसार परीक्षा शुल्क जमा करने पर वार्षिक परीक्षा देने की अनुमति दी जाएगी।
8. जो विद्यार्थी द्वितीय वर्ष की परीक्षा के साथ-साथ प्रथम वर्ष का बैक लॉग भी देना चाहते हैं उन्हें समय पर आवेदन भेजने पर अनुमति दी जा सकती है। प्रवेश से लेकर पूरे पाँच वर्ष में विद्यार्थियों को पूर्ण रूप से सभी प्रश्न-पत्रों को उत्तीर्ण कर लेना होगा अन्यथा उनका प्रवेश रद्द कर दिया जाएगा।
9. द्वितीय वर्ष का शुल्क जमा करने के बाद ही विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री भेजी जाएगी।
10. परीक्षा-आवेदन पत्र में विद्यार्थी एक बार जिस परीक्षा केंद्र का चयन करेंगे बाद में उसे बदला नहीं जाएगा। विशेष परिस्थिति में विद्यार्थी निर्धारित शुल्क रुपये 500/- जमा करके परीक्षा केंद्र बदलने का आवेदन कर सकते हैं। इस संबंध में अंतिम निर्णय दूरस्थ शिक्षा निदेशालय का होगा।
11. स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा के छात्र यदि किसी कारण से वार्षिक परीक्षा नहीं दे पाते हैं तो उन्हें निर्धारित समय से पूर्व नवीकरण शुल्क रुपये 1000/- जमा करना होगा। निर्धारित समय के बाद भेजे गए आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा।
12. स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा के वे विद्यार्थी जो पहले सत्र में दत्त कार्य एवं प्रोजेक्ट वर्क जमा कर चुके हैं उन्हीं के आधार पर उनका मूल्यांकन किया जाएगा। यदि कोई विद्यार्थी दत्त कार्य, प्रोजेक्ट वर्क पहले नहीं भेज पाता है तो नवीकरण के पश्चात् दत्त कार्य, प्रोजेक्ट वर्क निर्धारित समय पर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय से मंगवाने तथा समय पर जमा करने की जिम्मेदारी उनकी स्वयं की होगी। इसके लिए उसे दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा निर्धारित शुल्क जमा करना होगा।
13. **परिचय पत्र :** प्रवेश प्राप्त करने के बाद विद्यार्थियों को परिचय पत्र दिया जायेगा। यदि किसी कारणवश परिचय पत्र खो जाता है तो निर्धारित शुल्क रुपये जमा करके विद्यार्थी नया परिचय-पत्र प्राप्त कर सकते हैं।
14. **पुस्तकालय :** सभा के सभी केन्द्रों में पुस्तकालय की सुविधा उपलब्ध है, इसकी सदस्यता दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य है।

नोट: छात्र सभा के स्थानीय केंद्र के पुस्तकालय के नियमों का पालन करने के लिए बाध्य होंगे।

उत्तीर्णता-नियम :

तृतीय श्रेणी (उत्तीर्णता अंक) (III Class)	40 - 49	प्रतिशत
द्वितीय श्रेणी (II Class)	50 - 59	प्रतिशत
प्रथम श्रेणी (I Class)	60 - 74	प्रतिशत
प्रथम श्रेणी - विशेष योग्यता (Distinction)	75 प्रतिशत से अधिक	

पुनःजाँच एवं श्रेणी सुधार:

1. पुनः जाँच की सुविधा तथा श्रेणी सुधार के लिए पुनः परीक्षा देने की सुविधा रहेगी। कुलसचिव के नाम परीक्षा परिणाम घोषित होने के 45 दिनों के भीतर आवेदन करना तथा निर्धारित शुल्क भेजना अनिवार्य है। पुनः जाँच के लिए प्रत्येक प्रश्न-पत्र के लिए रु.500/- शुल्क होगा और अंक गिनती करने के लिए प्रत्येक प्रश्न-पत्र के लिए रु.50/- शुल्क होगा। श्रेणी सुधार हेतु (विशेष अनुमति पर) पुनः परीक्षा के लिए प्रत्येक पत्र के लिए शुल्क रु.150/- रहेगा।
2. यदि किसी विद्यार्थी की अंक-सूची में नाम या अन्य प्रकार की कोई त्रुटि हो तो सुधरी हुई अंक सूची के लिए 60 दिनों के भीतर आवेदन निर्धारित शुल्क रुपये 100/- के साथ जमा करना होना। इसके बाद प्राप्त आवेदनों पर विचार नहीं किया जाएगा।

शुल्क-विवरण

	एम.ए. (हिन्दी) I	एम.ए. (हिन्दी) II	स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा (एक वर्ष)
	रु.	रु.	रु.
1. आवेदन पत्र	**500**		
2. वार्षिक शुल्क + डाक, स्टेशनरी, अन्य	5500	5500	5250
विलंब शुल्क	100	+ 200	
3. परीक्षा शुल्क	1000	(प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए रु. 250/-)	
4. स्थानांतरण शुल्क	500	+ रु. 50 डाक खर्च	
5. संस्थानांतरण शुल्क	500	+ रु. 50/- डाक खर्च	
6. प्राविजनल प्रमाणपत्र	600	+ रु. 50/- डाक खर्च	
7. परीक्षा केंद्र बदलने हेतु शुल्क	500		
8. पता बदलने हेतु शुल्क	100		
9. नवीकरण शुल्क	1000		
10. पुराने छात्रों को नया दत्तकार्य भेजने हेतु शुल्क	200	प्रति प्रश्न पत्र रु.50 + 100 (डाक खर्च)	
11. लौटा हुआ दत्त कार्य पुनः भेजने हेतु शुल्क	200	प्रति प्रश्न पत्र रु.50 + 100 (डाक खर्च)	
12. लौटी हुई पाठ्य सामग्री पुनः भेजने हेतु शुल्क	500		
13. मूल प्रमाण पत्र हेतु शुल्क	1000	+ 50 (डाक खर्च)	
14. नाम बदलने हेतु शुल्क	500		
15. डुप्लिकेट प्रमाण पत्र हेतु शुल्क	1000	+ 50 डाक खर्च	

1. एम.ए. द्वितीय वर्ष के लिए शुल्क जमा करने की अंतिम तारीख	- 30 जून, 25 फरवरी
2. एम.ए. द्वितीय वर्ष के लिए विलम्ब शुल्क रु. 150/- के साथ जमा करने की अंतिम तारीख	- 30 जुलाई, 30 मार्च
3. एम.ए. प्रथम वर्ष/पी.जी. अनुवाद डिप्लोमा के पंजीकरण शुल्क तथा शिक्षा शुल्क जमा करने की अंतिम तारीख	- 7 जुलाई, 25 फरवरी
(क) विलम्ब शुल्क रुपये 150/- के साथ शुल्क जमा करने की अंतिम तारीख	- 31 अगस्त, 30 मार्च
(ख) विलम्ब शुल्क रुपये 300/- के साथ शुल्क जमा करने की अंतिम तारीख	- 30 सितम्बर, 30 अप्रैल
(ग) विलम्ब शुल्क रुपये 500/- के साथ शुल्क जमा करने की अंतिम तारीख	- 31 अक्तूबर, 30 मई

भुगतान की पद्धति

1. भरे हुए आवेदन-पत्र के साथ पंजीकरण शुल्क तथा अन्य सभी शुल्क के लिए एक डी.डी. **"The Registrar, Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, Madras"** के नाम लेकर रजिस्टर्ड डाक द्वारा **निदेशक,**

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय The Director, Distance Education Directorate, Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, T. Nagar, Chennai-17, को यथासमय भेजना अनिवार्य होगा।

2. तात्कालिक रूप से प्रवेश अनुमति-पत्र प्राप्त होते ही, प्रथम वर्ष का वार्षिक शुल्क एवं अन्य शुल्क जमा करना होगा। द्वितीय वर्ष के लिए शुल्क जमा करने की अलग से सूचना नहीं दी जाएगी। अतः छात्रों को सलाह दी जाती है कि द्वितीय वर्ष का शुल्क समय पर जमा करने के लिए "विवरण पत्रिका" को सुरक्षित रखें। शुल्क बकायेदारों का प्रवेश रद्द कर दिया जाएगा। पुनः प्रवेश के लिए निदेशक की विशेष अनुमति प्राप्त करनी होगी। **छात्रों को किस्तों में शुल्क अदा करने के लिए अनुमति नहीं है।**
3. शिक्षा-शुल्क एवं परीक्षा शुल्क के लिए **अलग-अलग डी.डी.** लेकर भेजना अनिवार्य है।
4. **एक बार शुल्क अदा करने पर किसी भी स्थिति में वापस नहीं किया जाएगा।**

सामान्य अनुदेश :

1. आवेदकों को सलाह दी जाती है कि शुल्क-रकम **The Registrar, Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, T. Nagar, Madras-600 017** के नाम डी.डी. के द्वारा अथवा देना बैंक विस्तरण शाखा में जमा करके **The Director, Distance Education Directorate, Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, T. Nagar, Chennai-600 017** के नाम **Registered Post with Acknowledgement due** पर भेज सकते हैं या समक्ष पहुँचा सकते हैं। मनी आर्डर, मेईल ट्रान्सफर के द्वारा शुल्क स्वीकृत नहीं किया जाएगा।
2. अन्य किसी माध्यम (मनी आर्डर, मेल ट्राँसफर या नकद) से शुल्क का भुगतान करने की अनुमति नहीं होगी। यदि कोई विद्यार्थी ऐसा करता है तो इसके लिए वह स्वयं उत्तरदायी होगा। इस संबंध में किसी भी स्थिति में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय जवाबदेय नहीं होगा।

शिक्षण पद्धति :

दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रम के अन्तर्गत छात्रों के लाभार्थ शिक्षण निम्नप्रकार से दिया जाएगाः-

1. पाठ्य-सामग्री :

* पाठ्य-सामग्री 'दूरस्थ शिक्षा निदेशालय' दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, द्वारा शिक्षा शुल्क अदा करने के निर्धारित समय के भीतर भेजी जाएगी। पाठ्य-सामग्री, प्रश्न-बैंक, दत्तकार्य उत्तर पुस्तिका और संबंधित पुस्तकों के लिए अलग से शुल्क देना होगा, जिसकी सूचना यथासमय दी जाएगी। (शुल्क विवरण हेतु, शुल्क-विवरण तालिका देखे)
* यदि किसी कारणवश (डाक संबंधी या अन्य) पाठ्य सामग्री दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के पास वापस लौट आती है तो उसे पुनः भेजने के लिए निर्धारित शुल्क रु.500/- जमा करना होगा।

2. व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम :

* व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम चुने गए केन्द्रों में प्रति वर्ष चलाया जाएगा। इस संबंध में छात्रों की संख्या के आधार पर प्रान्तीय सचिवों से विचार-विमर्श करके निर्णय लिया जाएगा। जिसकी सूचना यथा समय विद्यार्थियों को दी जायेगी।
* व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम न्यूनतम 5 छात्रों के उपस्थित होने पर ही निर्धारित केन्द्रों पर चलाया जाएगा। विशेष परिस्थितियों में निदेशालय किसी केन्द्र में चलाए जानेवाले व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम को निरस्त कर सकता है। **व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम में उपस्थिति अनिवार्य है।**

3. दत्तकार्य :

(i) दूरस्थ शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रत्येक शैक्षिक वर्ष में दो दत्त कार्य भेजें जायेंगे।
(ii) प्रत्येक प्रश्न-पत्र में आंतरिक मूल्यांकन के लिए 25 अंक निर्धारित हैं।
(iii) यदि किसी कारणवश विद्यार्थियों के भेजा गया दत्त कार्य वापस दूरस्थ शिक्षा निदेशालय में लौट आता है तो विद्यार्थी के विशेष अनुरोध पर दत्त कार्य उसे पुनः भेजा जा सकता है, जिसके लिए विद्यार्थी को निर्धारित शुल्क रुपये 500/- जमा करना होगा।
(iv) दत्त कार्य पूरा करके निर्धारित समय पर मूल्यांकन हेतु निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के नाम पर भेजना होगा।
(v) जो दत्तकार्य निर्धारित समय के बाद प्राप्त होंगे उनका मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

विवाद : प्रवेश, परीक्षा आदि से संबंधित सभी मामलों के लिए न्यायालय - अधिकार क्षेत्र - चेन्नई रहेगा।

पता-परिवर्तन : किसी प्रकार के "**पता-परिवर्तन**" के संदर्भ में, परिवर्तित पते की सूचना, अपनी प्रवेश-संख्या का उल्लेख करते हुए, "निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, द. भा. हि. प्र. सभा, चेन्नई-17 "**The Director, Distance Education Directorate, Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, Thyagarayanagar, Chennai-17**" के नाम भेजना होगा। अन्यथा छात्रों के द्वारा, आवेदन-पत्र पर पहले दिए हुए पते पर ही सारी सूचनाएँ भेजी जाएँगी।

विवरण एवं परीक्षा योजना

एम.ए. (हिन्दी)

	परीक्षा अवधि	आंतरिक मूल्यांकन	बाहरी मूल्यांकन	कुल अंक
प्रथम वर्ष :				
पहला पत्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास	3 घंटे	25	75	100
दूसरा पत्र : आधुनिक काव्य	3 घंटे	25	75	100
तीसरा पत्र : गद्य साहित्य	3 घंटे	25	75	100
चौथा पत्र : सामान्य भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा का इतिहास एवं हिन्दी व्याकरण	3 घंटे	25	75	100
द्वितीय वर्ष :				
पाँचवाँ पत्र : प्रयोजनमूलक हिन्दी एवं अनुवाद सिद्धांत	3 घंटे	25	75	100
छठा पत्र : प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य	3 घंटे	25	75	100
सातवाँ पत्र : भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र	3 घंटे	25	75	100
आठवाँ पत्र : विशेष अध्ययन – प्रेमचन्द अथवा हिंदी भाषा की प्रकृति और विकास (पत्रकारिता के विशेष संदर्भ में)	3 घंटे	25	75	100
नौवाँ पत्र : मौखिक	–	–	–	100

आंतरिक मूल्यांकन के लिए दिए गए दत्त कार्य में कम से कम 10 अंक प्राप्त करना अनिवार्य है।

स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा

	परीक्षा अवधि	आंतरिक मूल्यांकन	बाहरी मूल्यांकन	कुल अंक
प्रथम वर्ष :				
पहला पत्र : अनुवाद - सिद्धांत पक्ष	3 घंटे	25	75	100
दूसरा पत्र : अनुवाद की सीमाएँ और समस्याएँ	3 घंटे	25	75	100
तीसरा पत्र : अनुवाद का अनुप्रयुक्त/व्यावहारिक पक्ष-1	3 घंटे	25	75	100
चौथा पत्र : अनुवाद का अनुप्रयुक्त/व्यावहारिक पक्ष-2	3 घंटे	25	75	100
पाँचवाँ पत्र : पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद	3 घंटे	25	75	100
छठा पत्र : प्रायोगिक एवं मूल्यांकन	–	–	–	100

छठे पत्र के लिए प्रस्तुत किये जानेवाला कार्य समय पर नहीं जमा करने पर परीक्षार्थियों को अगले वर्ष के लिए रोक दिया जाएगा।

पाठ्यक्रम विवरण
एम.ए. (प्रथम वर्ष)
प्रश्न पत्र-1
हिंदी साहित्य का इतिहास: (आरंभ से सन् 1980 तक)

क. आदिकाल:

1. आदिकाल का नामकरण
2. आदिकालीन साहित्य की सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
3. आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
   - (i) नाथ साहित्य, सिद्ध साहित्य और जैन साहित्य
   - (ii) अपभ्रंश साहित्य
   - (iii) वीरगाथा साहित्य

ख. भक्तिकाल:

1. भक्तिकालीन साहित्य की सामाजिक, राजनैतिक, दार्शनिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
2. भक्ति साहित्य का उद्‌भव और विकास
3. निर्गुण भक्ति साहित्य
   - (i) निर्गुण भक्ति साहित्य की विशेषताएँ और उसका दर्शन
   - (ii) संतकाव्य की विशेषताएँ
   - (iii) प्रेममार्गीय काव्य की विशेषताएँ
4. सगुण भक्ति साहित्य
   - (i) सगुण भक्ति साहित्य की विशेषताएँ और उसका दर्शन
   - (ii) राम भक्ति काव्य की विशेषताएँ
   - (iii) कृष्ण भक्ति काव्य की विशेषताएँ

ग. रीतिकाल:

1. रीतिकालीन साहित्य की सामाजिक राजनैतिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
2. रीतिकालीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ–रीतिबद्ध, रीतिमुक्त और रीति सिद्ध काव्य

घ. आधुनिक काल:

1. आधुनिक साहित्य की सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
2. आधुनिक काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
   - (i) भारतेन्दु एवं द्विवेदी युगीन काव्य
   - (ii) छायावादी काव्य
   - (iii) हालावादी काव्य
   - (iv) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य
   - (v) प्रगतिवादी काव्य
   - (vi) प्रयोगवादी काव्य एवं नयी कविता
   - (vii) नए काव्य आंदोलन, अकविता, राजनैतिक कविता, मोहभंग की कविता

3. गद्य साहित्य
   (i) भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य
   (ii) हिंदी नाटक का विकास
   (iii) हिंदी एकांकी उद्‌भव एवं विकास
   (iv) हिंदी उपन्यास
   (v) हिंदी कहानी
   (vi) हिंदी निबंध
   (vii) हिंदी आलोचना
   (viii) हिंदी की अन्य गद्य विधाएँ
      रेखा चित्र
      संस्मरण
      रिपोर्ताज
      यात्रा संस्मरण
      जीवनी/आत्मकथा
      डायरी

संदर्भ ग्रंथ:

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा-201 301
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
3. हिन्दी साहित्य की भूमिका – हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर, बंबई
4. हिन्दी साहित्य का भक्ति और रीतिकाल – सन्धि कालीन प्रवृत्तियाँ–डॉ. विष्णुशरण इन्दु, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
5. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास – गणपति चन्द्र गुप्त
6. अकविता आंदोलन – जगदीश चतुर्वेदी
7. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. बच्चन सिंह
8. छायावाद – नामवर सिंह
9. हालावाद और बच्चन – प्रो. दशरथ राज, प्रका.: महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे

प्रश्न पत्र-2

आधुनिक काव्य

1.	साकेत (नवं सर्ग)	–	मैथिलीशरण गुप्त
2.	कामायनी–जयशंकर प्रसाद, (चिंता, श्रद्धा, लज्जा)	–	जयशंकर प्रसाद
3.	नदी के द्वीप, असाध्य वीणा	–	अज्ञेय
4.	तारापथ (परिवर्तन)	–	सुमित्रानन्दन पंत
5.	मोचीराम	–	धूमिल
6.	संधिनी	–	महादेवी वर्मा
7.	अंधेरे में	–	मुक्तिबोध
8.	'राग-विराग' (सरोज स्मृति, कुकुरमुत्ता राम की शक्ति पूजा)	–	सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"

संदर्भ ग्रंथ:

1.	साकेत - विचार एवं विश्लेषण	–	डॉ. वचनदेव कुमार
2.	साकेत - एक समीक्षा	–	हनुमन्तदास गुप्त
3.	साकेत - एक अध्ययन	–	डॉ नगेन्द्र
4.	जयशंकर प्रसाद	–	नंददुलारे वाजपेयी, भारती भंडार, इलाहाबाद
5.	कामायनी के अध्ययन की समस्याएँ	–	नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
6.	कामायनी एक पुनर्विचार	–	गजानन माधव मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7.	निराला की साहित्य साधना 3 भाग	–	रामविलास शर्मा, प्रका.: राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8.	निराला साहित्य : एक नया आयाम	–	डॉ. राम प्रसाद गुप्त, राधाकृष्ण
9.	निराला : एक आत्महंता	–	दूधनाथ सिंह
10.	अज्ञेय और आधुनिक रचना की समस्याएँ	–	रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती, इलाहाबाद
11.	अज्ञेय की कविता एक मूल्यांकन	–	डॉ. चंद्रकांत बांदीवडीकर, सरस्वती प्रेस, दिल्ली
12.	मुक्तिबोध की काव्य प्रक्रिया	–	अशोक चक्रधर, प्रका.: मैकमिलन, दिल्ली
13.	मुक्तिबोध प्रतिबद्ध काव्यकला के प्रतीक	–	चंचल चव्हाण, प्रका.: लिपि प्रकाशन, दिल्ली
14.	अज्ञेय : सृजन और संदर्भ	–	राजकमल राय, प्रका.: नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
15.	तारापथ	–	सुमित्रानंदन पंत
16.	संधिनी	–	महादेवी वर्मा
17.	मोचीराम	–	धूमिल

प्रश्न पत्र-3
गद्य साहित्य

1. स्कन्दगुप्त – जयशंकर प्रसाद
2. चिंतामणि भाग-1 – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
   (नीचे दिए गए निबंध अध्ययन के लिए निर्धारित हैं:-
   (1) भाव या मनोविकार, (2) उत्साह, (3) श्रद्धा-भक्ति, (4) कविता क्या है?, (5) काव्य में लोक-मंगल की साधनावस्था (6) रसात्मकबोध के विविध रूप।)
3. बाणभट्ट की आत्मकथा– डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. मैला आँचल – फणीश्वरनाथ रेणु
5. कहानी इक्कीसी – (निर्धारित कहानियाँ:–
   (1) पूस की रात, (2) बिसाती, (3) करवा का व्रत, (4) डाची, (5) मुगलों ने सल्तनत बख्श दी, (6) शरणदाता, (7) भोलाराम का जीव, (8) धूप की उँगलियों के निशान, (9) परमात्मा का कुत्ता, (10) वापसी, (11) ठेस, (12) तलाश

सूचना : 1. कथा साहित्य, नाटक और निबंध से सप्रसंग व्याख्या और प्रश्न पूछे जाएँगे।
2. उपन्यास से मात्र प्रश्न पूछे जाएँगे।

अतिरिक्त अध्ययन के लिए संदर्भ ग्रन्थ:

1. हिन्दी उपन्यास – उपलब्धियाँ – लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. अठारह उपन्यास – राजेन्द्र यादव
3. उपन्यास के आयाम – डॉ. आर.के. जैन
4. हिन्दी कहानी का इतिहास – डॉ. लालचन्द्र गुप्त मंगल, राधाकृष्ण प्रकाशन
5. हिन्दी कहानी स्वरूप एवं संवेदना – राजेन्द्र यादव
6. कहानी, नई कहानी – नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन
7. हिन्दी नाटक – डॉ. बच्चन सिंह
8. आधुनिक हिन्दी नाटक – नेमिचंद जैन
9. आलोचक रामचंद्र शुक्ल – संपा.: गुलाबराय, विजयेंद्र स्नातक, प्रका.: आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली
10. फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य – डॉ. अंजलि तिवारी
11. फणीश्वरनाथ रेणु का कथाशिल्प – डॉ. रेणु शांड
12. मैला आँचल की रचना प्रक्रिया – डॉ. देवेश ठाकुर
13. फणीश्वरनाथ रेणु व्यक्तित्व एवं कृतित्व – डॉ. हरिशंकर दुबे
14. फणीश्वरनाथ रेणु और मैला आँचल – गोपाल राय

प्रश्न पत्र: 4

सामान्य भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा का इतिहास एवं हिन्दी व्याकरण

क. सामान्य भाषा विज्ञान:

1. भाषा विज्ञान – परिभाषा और विषय क्षेत्र
2. भाषा विज्ञान का अध्ययन-क्षेत्र – ध्वनि, शब्द, रूप और अर्थ
3. भाषा की परिभाषा : प्रकृति – भाषा परिवर्तन के कारण
4. भाषा की उत्पत्ति – विभिन्न सिद्धांत
5. बोली और भाषा
6. भाषाओं का आकृतिमूलक वर्गीकरण
7. भारत के भाषा - परिवार
8. भारोपीय परिवार का वर्गीकरण
9. भारतीय आर्य भाषाएँ - प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक आर्यभाषाएँ – ऐतिहासिक सर्वेक्षण, वर्गीकरण तथा विशेषताएँ

ख. हिन्दी भाषा का इतिहास:

1. हिन्दी : क्षेत्र तथा बोलियाँ
2. हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकास - खड़ी बोली के विशेष संदर्भ में
3. हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण
4. हिन्दी : शब्द रचना तथा शब्द भण्डार
5. भारत में लिपियों का विकास तथा देवनागरी लिपि
6. देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता तथा आवश्यक सुधार

ग. हिन्दी व्याकरण - वाक्य विन्यास

1. कारकों का अर्थ और प्रयोग
2. कर्म और क्रिया का अन्वय
3. सर्वनाम
4. विशेषण और संबंधकारक
5. कालों का अर्थ और प्रयोग
6. क्रियार्थक संज्ञा
7. कृदंत - उपसर्ग - प्रत्यय
8. संयुक्त क्रियाएँ
9. अव्यय

संदर्भ ग्रंथ:

1. भाषा विज्ञान – भोलानाथ तिवारी प्र.: किताब महल, इलाहाबाद
2. सामान्य भाषाविज्ञान – बाबूराम सक्सेना, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
3. भाषाविज्ञान की भूमिका – देवेन्द्रनाथ शर्मा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. सामान्य भाषा विज्ञान – वैश्ना नारंग, संस्थान प्रकाशन, दिल्ली
5. आधुनिक भाषा विज्ञान – कृपाशंकर सिंह, चतुर्भुज सहाय, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
6. हिन्दी भाषा का इतिहास – धीरेन्द्र वर्मा
7. Language _ Leonard Bloomfield; Motilal Banarasidas, Delhi
8. Outlines of Linguistic Analysis _ B. Block and C.LO. Trager, Munshiram, Manoharlal, Delhi.
9. भाषा पत्रिका – भाषा विज्ञान विशेषांक 1974, केंद्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली
10. शैक्षिक व्याकरण और व्यावहारिक हिंदी– कृष्णकुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली

– – – – –

एम.ए. (द्वितीय वर्ष)

प्रश्न पत्र-5

प्रयोजनमूलक हिन्दी एवं अनुवाद

क. प्रयोजनमूलक हिन्दी

1. संविधान में हिन्दी
2. कार्यालयी हिन्दी का स्वरूप और क्षेत्र
3. (i) सरकारी पत्राचार - प्रकार, प्रयोग, स्वरूप
   (ii) मसौदा लेखन - सामान्य सिद्धांत, अनुदेश और मसौदा लेखन अभ्यास
4. (i) स्मरण पत्र
   (ii) आवेदन पत्र, प्रतिवेदन
   (iii) पृष्ठांकन और कार्यक्रम
   (iv) अर्धसरकारी पत्र, कार्यालय आदेश
   (v) कार्यालय ज्ञापन स्वीकृति, कार्यालय ज्ञापन अनुमति, कार्यालय ज्ञापन अनुशासनिक, कार्यालय ज्ञापन सरकारी
   (vi) अधिसूचना, संकल्प, परिपत्र
   (vii) तार सन्देश, शुभ कामनाएँ, त्वरित पत्र
   (viii) सूचना, प्रेस विज्ञप्ति, प्रेस नोट
   (ix) नीलामी सूचना, निविदा, विज्ञापन, अपील, संदेश
5. (i) टिप्पणी लेखन - सामान्य सिद्धांत, प्रकार, अनुदेश, सहायक अधिकारी स्तर की टिप्पणियाँ
   (ii) टिप्पणी लेखन अभ्यास - सहायक स्तर की टिप्पणियाँ, अधिकारी स्तर की टिप्पणियाँ, अनुशासनिक कार्रवाई, अनुशासनिक (अन्तर्विभागीय टिप्पणी)
6. बैठकों एवं समितियों का आयोजन, कार्य-सूची, कार्यवाही/कार्यवृत्त
7. संसद कार्य, संसद प्रश्न, उत्तर का मसौदा, अनुपूरक प्रश्नों की टिप्पणियाँ
8. कार्यालयीन साहित्य का अनुवाद, सिद्धांत, समस्याएँ, कार्यालयीन वाक्य ढाँचे, स्थिति एवं प्रयोगगत विशेषताएँ
9. सार लेखन - प्रकार, सिद्धांत, क्रमिक सार, तारीखवार सार
10. सार लेखन अभ्यास - पत्राचार के आधार पर, टिप्पणियों के आधार पर, नियमों-विनियमों के आधार पर

ख. अनुवाद : सिद्धांत पक्ष

1. अनुवाद सिद्धांत

1. (i) अनुवाद परिभाषा, स्वरूप और क्षेत्र
   (ii) अनुवाद की प्रकृति
   (iii) अनुवाद के लिए अर्थगत और रूपपरक दृष्टिकोण
2. अनुवाद के प्रकार-पूर्ण और आंशिक : समग्र और परिसीमित शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद, शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद और छायानुवाद, सारानुवाद और व्याख्यानुवाद, आशु अनुवाद
3. अनुवाद की समस्याएँ – साहित्यिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी और प्रशासनिक अनुवाद
4. पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण, प्रक्रिया और समस्याएँ
5. अनुवादक के गुण और अर्हताएँ, सफल अनुवाद के तत्व

ग. अनुवाद का अनुप्रयुक्त पक्ष

1. (i) कोशों के प्रयोग की विधि – अभ्यास और चर्चा
   (ii) हिन्दी से अंग्रेज़ी और अंग्रेज़ी से हिन्दी में लिप्यंतरण की विधि और अभ्यास
2. अंग्रेज़ी पद्यांश का हिन्दी में अनुवाद
3. हिन्दी गद्यांश का अंग्रेज़ी में अनुवाद
4. पारिभाषिक शब्दावली की निर्माण प्रक्रिया
5. साहित्यिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और प्रशासनिक अनुवाद

संदर्भ ग्रंथः

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी – दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
2. कार्यालय क्रिया विधि – चिरंजीलाल, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
3. सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग – डॉ. गोपीनाथ एवं डॉ. श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. कार्यालय हिन्दी – कार्मिक एवं प्रशासनिक विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार
5. Linguistic Theory of Translation — J.C. Cattford, Oxford University Press, London
6. Translation studies — Susan Bassnett Mcguire, Mathuen, London
7. अनुवाद कला और समस्याएँ – वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक मंत्रालय, नई दिल्ली
8. The Art of Translation — Umasankar Joshi & I. Panduranga Rao
9. अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. जी. गोपीनाथन, लोक भारती प्रकाशन, दिल्ली
10. अनुवाद कला – डॉ. विश्वनाथ अय्यर, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
11. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ – डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली
12. काव्यानुवाद की समस्याएँ – डॉ. भोलानाथ तिवारी और महेंद्र चतुर्वेदी, शब्दकार, दिल्ली
13. कार्यालयी अनुवाद की समस्याएँ – डॉ. भोलानाथ तिवारी, डॉ. कृष्णकुमार गोस्वामी तथा डॉ. गुलाटी
14. अनुवाद : अवधारणा और अनुप्रयोग – डॉ. चंद्रभान रावत और डॉ. दिलीप सिंह; उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, द.भा.हि. प्र. सभा, मद्रास
15. अनुवाद : नये संदर्भ : नई पीठिका – सं. डॉ. दिलीपसिंह प्र : दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

प्रश्न पत्र - 6

प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य

क. चंदबरदाई

ख. विद्यापति पदावली

ग. कबीर

घ. गोस्वामी तुलसीदास

च. सूरदास – भ्रमरगीत सार

छ. बिहारी बोधिनी

ज. मलिक मुहम्मद जायसी

संदर्भ ग्रन्थः

1. प्राचीन काव्य – ओमप्रकाश, राधाकृष्ण प्रकाशन
2. कवि विद्यापति – डॉ. शिवप्रसाद सिंह
3. त्रिवेणी – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
4. सूर साहित्य – डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. सूर की काव्य कला – डॉ. मनमोहन गौतम, चांद एण्ड कंपनी, रामनगर, नई दिल्ली
6. बिहारी – विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. बिहारी नवनीत – डॉ. आर.के. जैन
8. तुलसीदास और उनका काव्य – डॉ. रामनरेश त्रिपाठी
9. कबीर – डॉ. विजयेन्द्र स्नातक, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

प्रश्न पत्र - 7

भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र

1. काव्य स्वरूप :

1. साहित्य
2. काव्य की परिभाषा
3. काव्य भेद
4. काव्य लक्षण
5. काव्य हेतु
6. काव्य प्रयोजन
7. काव्य गुण (माधुर्य/ओज/प्रसाद)
8. काव्य दोष
9. शब्द शक्ति
10. काव्य की आत्मा

2. भारतीय काव्य शास्त्र :

1. भारतीय काव्य शास्त्र की परंपरा
2. रस
3. ध्वनि
4. अलंकार
5. रीति
6. वक्रोक्ति
7. औचित्य
8. छंद शास्त्र

3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र :

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा
2. प्लेटो
3. अरस्तू
4. लोंजाइनस
5. होरेस
6. विलियम वर्ड्सवर्थ
7. कॉलरिज
8. मैथ्यू आर्नल्ड
9. बेनेदेतो क्रोचे
10. टी.एस. इलियट
11. आई.ए. रिचर्ड्स

4. साहित्यिक वाद :

1. रहस्यवाद
2. आदर्शवाद
3. नव्यशास्त्रवाद
4. स्वच्छंदतावाद
5. यथार्थवाद
6. कलावाद
7. प्रतीकवाद
8. बिम्बवाद
9. अस्तित्ववाद
10. छायावाद
11. हालावाद
12. प्रगतिवाद
13. प्रयोगवाद
14. प्रपद्यवाद
15. मिथक

संदर्भ ग्रन्थ:

1. भारतीय काव्य शास्त्र की भूमिका – **डॉ.** नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।
2. रस सिद्धांत – **डॉ.** नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
3. भारतीय काव्यशास्त्र – **डॉ.** सत्यदेव चौधरी
4. काव्य तत्व विमर्श – **डॉ.** राममूर्ति त्रिपाठी
5. काव्य शास्त्र मार्गदर्शन – **डॉ.** कृष्णकुमार गोस्वामी, एस.इ.एस. एंड कं., दिल्ली
6. काव्य शास्त्र – **डॉ.** भगीरथ मिश्र
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परंपरा – सं. सावित्री सिन्हा, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
8. पाश्चात्य काव्य शास्त्रः सिद्धान्त और वाद – सं. रामकुमार कोहली
9. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – **डॉ.** देवेन्द्रनाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
10. उदात्त के विषय में (भूमिका) – **डॉ.** निर्मला जैन
11. पाश्चात्य साहित्य चिन्तन – डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस

प्रश्न पत्र - 8 (वैकल्पिक)

विशेष अध्ययन - प्रेमचन्द

क. उपन्यास

1. निर्मला
2. गबन
3. गोदान
4. सेवासदन

ख. कहानियाँ : मानसरोवर भाग - 1

1. अलग्योझा
2. ईदगाह
3. माँ
4. बड़े भाई साहब
5. नशा
6. स्वामिनी
7. ठाकुर का कुआँ
8. घर जमाई
9. पूस की रात
10. गुल्ली डंडा
11. घासवाली

संदर्भ ग्रंथ:

1. गोदान – संपादक : इन्द्रनाथ मदान, (के.एल. मालिक एण्ड सन्स, दिल्ली)
2. प्रेमचंद – सत्येंद्र – राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
3. कथाकार प्रेमचंद – रामदरस मिश्र और ज्ञानचक्र गुप्त, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
4. समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचंद – महेश भट्नागर, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
5. हिन्दी उपन्यास–विशेषकर प्रेमचंद – आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, ज्ञानपीठ प्रकाशन, पट्ना
6. कथाकार प्रेमचंद – रामविलास शर्मा (पाँचवाँ संस्करण) रामकमल प्रकाशन, दिल्ली

अथवा

प्रश्न पत्र - 8 (वैकल्पिक)

हिंदी भाषा की प्रकृति और विकास (पत्रकारिता के विशेष संदर्भ में)

क. हिंदी भाषा : अर्थ, संदर्भ एवं भूमिकाएँ

ख. प्रयोजनमूलक हिंदी

1. हिंदी का क्षेत्रीय और अक्षेत्रीय संदर्भ
2. साहित्यिक और साहित्येत्तर हिंदी
3. प्रयोजनमूलक हिंदी : कुछ वर्ग

ग. प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयुक्तिगत विश्लेषण

घ. हिंदी पत्रकारिता और हिंदी भाषा का विकास

1. राष्ट्रीय चेतना और हिंदी पत्रकारिता
2. नवजागरण और हिंदी पत्रकारिता
3. हिंदी पत्रकारिता और प्रमुख पत्रकार

च. हिंदी पत्रकारिता : भाषा विकास के विविध संदर्भ

1. फिल्म, खेलकूद पत्रकारिता और हिंदी
2. आर्थिक पत्रकारिता और हिंदी
3. साहित्य समीक्षा और हिंदी पत्रकारिता
4. राजभाषा पत्रकारिता
5. पत्रकारिता में पाकविधि की हिंदी

छ. हिंदी पत्रकारिता के अन्य भाषिक संदर्भ

1. हिंदी पत्रकारिता की भाषा
2. आधुनिक हिंदी पत्रकारिता की शब्द संपदा
3. हिंदी पत्रकारिता और अनुवाद
4. विज्ञापन की भाषा और अनुवाद

संदर्भ पाठ्य पुस्तकें:-

1. इस्सर, देवेंद्र – जनमाध्यम संप्रेषण और विकास, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995
2. गुप्त, बृजमोहन – स्वाधीन भारत में मनोरंजन और कला, पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, प्रा. लि. नई दिल्ली, 1998
3. हीबर्ट, आर.ई. और अन्य – मास मीडिया VI लांगमेन, न्यूयार्क, 1991
4. जोशी, पूरन चंद्र – संस्कृति, विकास और संचार क्रांति, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली-110 092
5. पारख, जवरीमल्ल – जनसंचार के सामाजिक संदर्भ, अनामिका पब्लिशर्स, दिल्ली-110 092
6. पारख, जवरीमल्ल – जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली-110 092
7. मैक्लुहन, मार्शल – अंडरस्टैंडिंग मीडिया, 1964
8. श्रेम विल्बर – दि स्टोरी ऑफ हयूमन कम्यूनिकेशन : केव पेंटिंग टू माइक्रोचिप, हारपर एंड रो, न्यूपार्क, 1988
9. दुबे, श्यामचरण – संचार और विकास, प्रकाशन विभाग, दिल्ली
10. गुप्त, बृजमोहन – जनसंचार : विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
11. हरिमोहन – समाचार, फ़ीचर-लेखन एवं संपादन-कला; तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली-110 002, 1999
12. संपादन - वे. आंजनेय शर्मा– दिलीप सिंह, ऋषभदेव शर्मा – भारतीय भाषा पत्रकारिता - एक अवलोकन : द. भा. हिंदी प्रचार सभा, आन्ध्र, हैदराबाद - 500 004, 2000

प्रश्न-पत्र: 9 – मौखिक परीक्षा

सामान्य ज्ञान, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पूरे पाठ्यक्रम के विषय आदि पर मौखिक प्रश्न पूछे जाएँगे।

– – –

स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा (एक वर्ष का पाठ्यक्रम)

प्रश्न पत्रः 1

अनुवाद : सिद्धांत पक्ष

क. अर्थ और अवधारणा – परिभाषा, स्वरूप, प्रकृति और प्रक्रिया

ख. अनुवाद के प्रकार
1. पूर्ण–आंशिक
2. समग्र और परिसीमित
3. साहित्यिक (सर्जनात्मक, भावानुवाद)
4. शाब्दिक अनुवाद
5. सार अनुवाद एवं छायानुवाद
6. यांत्रिक अनुवाद (मशीनी)

ग. 1. संरचना पक्ष (ध्वनि पक्ष, लेखिम पक्ष, शब्दपक्ष, वाक्यपक्ष)
2. शब्दकोश
3. अनुप्रयुक्त पक्ष एवं प्रोक्ति

घ. अनुवाद की उपादेयता
1. भाषा विकास के संदर्भ में
2. द्विभाषिक एवं बहुभाषिकता के संदर्भ में
3. राजभाषा, उद्योग एवं तकनीकी विकास के संदर्भ में
4. भारत की भावात्मक एकता के संदर्भ में

संदर्भ पाठ्य पुस्तकें:-

1. अनुवाद कला : कुछ विचार – डॉ. आनंद प्रकाश खेमाणी, प्र. एस चांद एण्ड कम्पेनी, दिल्ली
2. अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी, प्र. शब्दकार, दिल्ली
3. अनुवाद कला – चारुदेव शास्त्री
4. अनुवाद : अवधारणा और अनुप्रयोग – सं. डॉ. चंद्रभान रावत, डॉ. दिलीप सिंह, द.भा.हि.प्र. सभा, मद्रास
5. Nida, E.A. — Language structure and translation, Stanford University Press.
6. Nida and Taper — The Theory and practice of Translation, Leiden, E.J. Brile.
7. Catford, C.J. 1966 — Linguistic Theory of Translation, OUP, Navjeevan Publishing House, New Delhi.
8. T. Savory — Art of Translation, London: Cape.
9. अनुवादः मूल्य और मूल्यांकन – डॉ. शशिमुदिराज

प्रश्न पत्र : 2

अनुवाद की सीमाएँ और समस्याएँ

क. स्रोत और लक्ष्य भाषा की भिन्नताजन्य समस्याएँ
   1. भाषिक–शैली और संरचना
   2. वाक्यबंधपरक (डिसकोर्स) प्रयुक्ति
   3. सांस्कृतिक प्रतीक शब्द, अभिव्यक्तियाँ, लोकोक्ति, मुहावरे आदि।

ख. विधिपरक समस्याएँ:
   1. शैलीरूप : गद्य–पद्य
   2. साहित्य और साहित्येतर

ग. अनुवादनीयता की समस्या और समाधान

संदर्भ ग्रंथ:-

1. काव्यानुवाद की समस्याएँ–डॉ. भोलानाथ तिवारी एवं महेन्द्र चतुर्वेदी
2. विकासशील देशों में अनुवाद की समस्याएँ–सं. बालकृष्ण केसकर
3. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ–सं. डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, गोस्वामी
4. अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ–डॉ. भोलानाथ तिवारी, महेन्द्र चतुर्वेदी
5. Aspects of Translation—UNESCO
6. Linguistic and Cultural Problems of Translation—Trivedi H.C., New Order Book Depot, Ahmedabad.

प्रश्न पत्र: 3

अनुवाद का अनुप्रयुक्त/व्यावहारिक पक्ष–1

क. पत्रकारिता और अनुवाद
   1. समाचार संदर्भ
   2. समीक्षा-खेलकूद, फिल्म साहित्य तथा अन्य
   3. बाजार समाचार

ख. समाज विज्ञान और मानविकी विषयों का अनुवाद:
   मनोविज्ञान, दर्शन, इतिहास और समाजशास्त्र (इन में से कोई दो)

ग. साहित्य का अनुवाद

संदर्भ ग्रंथ:-

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी-केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
2. अनुप्रयुक्त "भाषाविज्ञान-संपादक: डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव एवं कृष्णकुमार गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।
3. हिन्दी का सामाजिक संदर्भ-डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, सहाय, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
4. वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक अनुवाद कला और समस्याएँ, कार्य मंत्रालय, 1961, नई दिल्ली।
5. व्यावहारिक अनुवाद - प्रो. टी.ई. विश्वनाथ अय्यर

प्रश्न पत्र: 4

अनुवाद का अनुप्रयुक्त/व्यावहारिक पक्ष-2

क. वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद
   1. संकल्पनात्मक शब्दावली
   2. विशिष्ट भाषा एवं पारिभाषिक शब्दावली

ख. व्यावसायिक और कार्यालयीन अनुवाद
   1. विज्ञापन
   2. प्रपत्र (बैंक आदि के)
   3. पत्र-व्यवहार

कार्यालयीन संदर्भ

1. प्रपत्र (आदेश, अनुदेश, ज्ञापन, विज्ञप्ति इत्यादि)
2. पदनाम
3. शब्दावली

संदर्भ ग्रंथ:-

1. कार्यालयीन अनुवाद की समस्याएँ–डॉ. भोलानाथ तिवारी
2. व्यावसायिक हिन्दी–डॉ. दिलीपसिंह, द.भा.हि.प्र. सभा, मद्रास
3. अनुवादः सिद्धांत और समस्याएँ–सं. श्रीवास्तव, गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।

प्रश्न पत्र: 5

पारिभाषिक शब्दावली और अनुवाद

1. हिन्दी पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण
   क. स्रोत
   ख. निर्माण-सिद्धांत
   ग. प्रक्रिया-संस्कृतिः प्रगतिपरक, संस्कृतिः अभिव्यक्तिपरक
   घ. ऐतिहासिकपक्ष-व्यक्तिगत, संस्थागत, केन्द्रीय शासन तथा राज्यशासन के स्तर पर
2. राष्ट्रीयतावादी, अंतर्राष्ट्रीयतावादी, लोकवादी तथा समन्वयवादी धारणाएँ।
3. भाषा का मानकीकरण व विशिष्टीकरण
4. प्रयुक्ति की संकल्पना और शब्दावली
5. आधुनिक भारतीय भाषाएँ एवं पारिभाषिक शब्दावली (हिन्दी, तेलुगु, तमिल, मलयालम, कन्नड़–किसी एक भाषा के संदर्भ में)

संदर्भ ग्रंथ:-

1. पारिभाषिक शब्दावलीः हिन्दी का समाजिक संदर्भ–गोपाल शर्मा, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा।
2. अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ–सं. श्रीवास्तव, गोस्वामी, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।
3. व्यावहारिक अनुवाद की समस्याएँ–तिवारी, गाबा, शब्दकार, दिल्ली।

प्रश्नपत्र: 6

प्रायोगिक एवं मूल्यांकन

संस्थान से दिये जानेवाले निर्देशों के आधार पर एक प्रोजेक्ट कार्य प्रस्तुत करना होगा।

नियम

1. प्रोजेक्ट कार्य A4 size के कागज में type और bind करवाकर जमा करना होगा। प्रोजेक्ट कार्य विलम्ब से आने पर वर्तमान सत्र में उस पर विचार नहीं किया जाएगा। ऐसी स्थिति में अगले शैक्षिक वर्ष के परीक्षाफल की घोषणा के समय ही कार्रवाई की जाएगी।
2. अनुवाद कार्य के लिए सामग्री संबंधी निर्देश समय पर दिया जाएगा।
3. प्रोजेक्ट कार्य के लिए सामग्री यथा समय भेजी जाएगी।

———— —

All Correspondence relating to admission, non receiving of guidelines, T.C. etc., examinations, results, mark-sheets should be addressed to:

THE DIRECTOR,
DISTANCE EDUCATION DIRECTORATE
DAKSHINA BHARAT HINDI PRACHAR SABHA,
UCCHA SIKSHA AUR SHODH SANSTHAN,
THANIKACHALAM ROAD,
CHENNAI - 600 017.

All Correspondence relating to Convocation should be addressed to:

THE REGISTRAR,
DAKSHINA BHARAT HINDI PRACHAR SABHA,
UCCHA SIKSHA AUR SHODH SANSTHAN,
THANIKACHALAM ROAD,
CHENNAI - 600 017.

शैक्षिक वर्ष की गतिविधियों का विवरण

1. विज्ञापन तथा आवेदन-पत्र वितरण – **15 मई, 15 जनवरी**

2. शैक्षिक वर्ष का प्रारम्भ – **15 जून, 15 फरवरी**

3. एम.ए. द्वितीय वर्ष के लिए शिक्षा शुल्क जमा करने की अन्तिम तारीख – **30 जून, 25 फरवरी**

4. एम.ए. प्रथम वर्ष तथा पी.जी. अनुवाद डिप्लोमा के पंजीकरण शुल्क तथा शिक्षा शुल्क जमा करने की अन्तिम तारीख – **30 जुलाई, 30 मार्च**

5. अध्ययन सामग्री तथा पाठ निर्देश का विवरण शिक्षा शुल्क जमा करने के **30 दिनों के अन्दर** भेज दिया जाएगा।

6. परीक्षा आवेदन-पत्र संस्थान से भेजने की अन्तिम तारीख – **14 जनवरी, 15 मई**

7. परीक्षा शुल्क, परीक्षा आवेदन-पत्र सहित जमा करने की अन्तिम तारीख – **15 फरवरी, 15 जून**

8. तात्कालिक प्रमाण पत्र, स्थानांतरण प्रमाण पत्र और संस्थानांतरण प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए दूरस्थ शिक्षा निदेशालय को पत्र लिखें। पत्र के साथ अंक सूची की जेरॉक्स कॉपी अवश्य भेजें। उक्त विषयों से संबंधित आवेदन-पत्र भर कर देने पर ही प्रमाण पत्र दिए जाएँगे।

सत्रान्त परीक्षा:

1. मई/दिसंबर के महीने में लगातार (छुट्टी के दिनों में भी) चलाई जाएगी।

2. परीक्षा की समाप्ति के 40-45 दिनों के अन्दर परीक्षाफल की घोषणा की जाएगी।

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
(विश्व विद्यालय शाखा)
एक नज़र

1. "दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास" संसदीय अधिनियम 14, 1964 द्वारा घोषित एक 'राष्ट्रीय महत्व की संस्था' है।
2. सभा को उक्त अधिनियम के द्वारा यू.जी.सी. अधिनियम में उल्लिखित उपाधियाँ देने का अधिकार प्राप्त है।
3. 1, जून 1964 को मद्रास में सभा का विश्वविद्यालय विभाग "उच्च शिक्षा और शोध संस्थान" के नाम से आरंभ किया गया। मद्रास में साहित्य-प्रधान पाठ्यक्रम अमल में है।
4. 1978 में हैदराबाद में हिन्दी स्नातकोत्तर् और अनुसंधान कांप्लेक्स आरंभ किया गया। उसमें भाषा प्रधान, प्रयोजन मूलक (फंक्शनल) पाठ्यक्रम अमल में है।
5. 1987 से धारवाड़ में 1988 से एर्णाकुलम में भी स्नातकोत्तर अनुसंधान केंद्र आरंभ किये गए हैं।
6. मद्रास, हैदराबाद, एर्णाकुलम और धारवाड़ केन्द्रों में एम.ए., एम.फ़िल., पी-एच.डी., डी.लिट् तथा स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा की पढ़ाई होती है।
7. मद्रास, हैदराबाद, विजयवाड़ा, विशाखपट्टणम, एर्णाकुलम, नीलेश्वरम, धारवाड़, बेलगाँव, बिजापूर, मैसूर, बैंगलूर में हिन्दी माध्यम में बी.एड. महाविद्यालय चलते हैं।
8. 1987 से हैदराबाद में पत्रकारिता (Journalism) और पुस्तकालय विज्ञान (Library Science) डिप्लोमा के पाठ्यक्रम हिन्दी माध्यम से चल रहा है।
10. सन् 2002 से दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से एम.ए. हिन्दी/स्नातकोत्तर अनुवाद डिप्लोमा का पाठ्यक्रम शुरू हुआ है।